त्रैमासिक
जुलाई–सितम्बर 2013
15 रुपये

अनुराग
बाल बुलेटिन
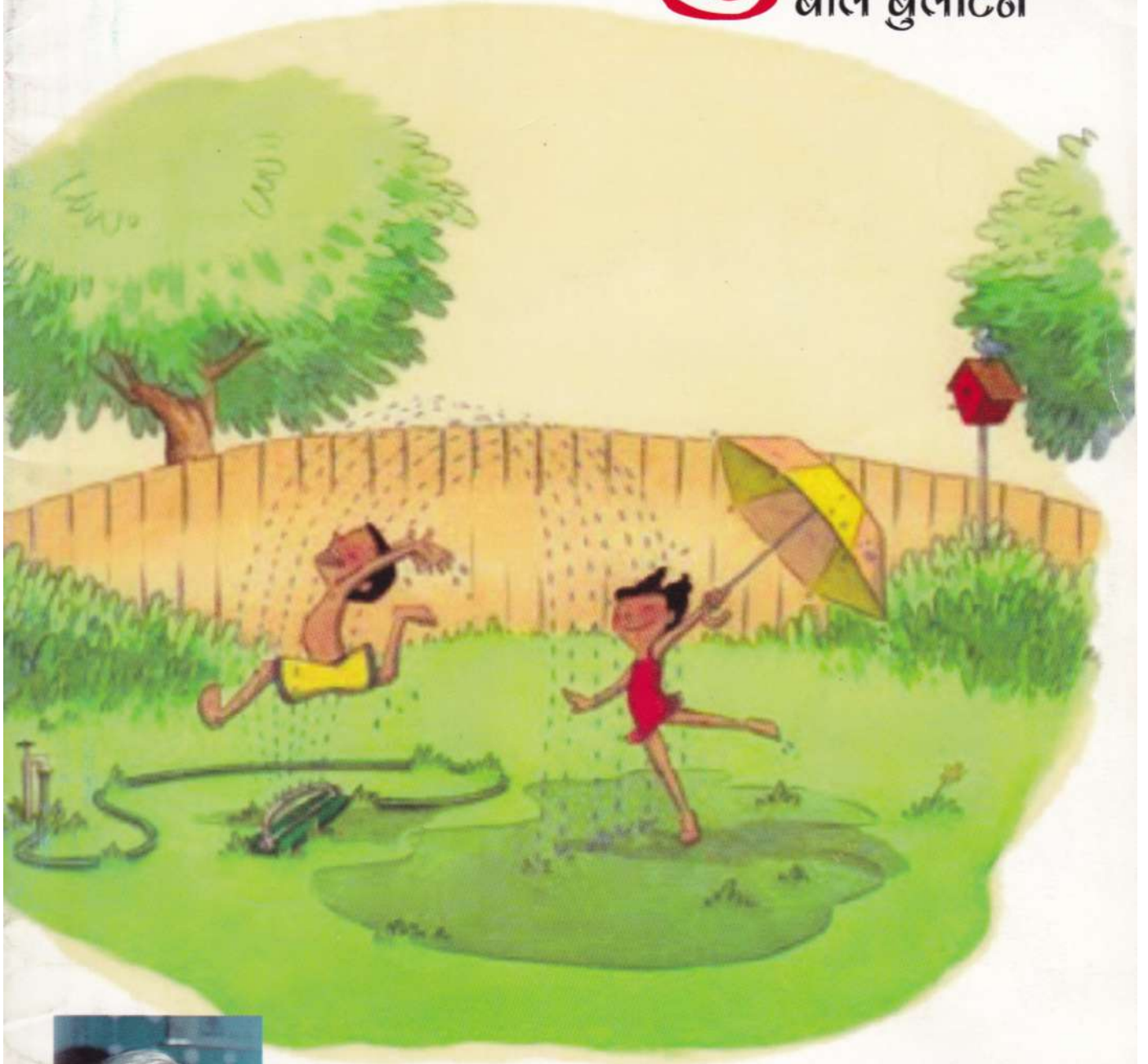
विशेष

स्मृति वीथिका : श्रीमती कमला पाण्डेय

नयी पीढ़ियों के विकास के लिए आजीवन समर्पित सतत् प्रेरणादायी व्यक्तित्व

जुलाई–अगस्त–सितम्बर की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 जुलाई (1906)

महान क्रान्तिकारी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के कमाण्डर अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्मदिवस।

23 जुलाई (1802)

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, 'थ्री मस्कीटियर्स', 'काउण्ट ऑफ माण्टे क्रिस्टो', 'आपल हरे' जैसे उपन्यासों के रचयिता अलेक्जेण्डर ड्यूमा का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1880)

महान कथाकार, भारतीय जनता के दुख-दर्द, आशाओं और सपनों को अपनी कलम के माध्यम से सामने लाने वाले कलम के सिपाही प्रेमचन्द का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1940)

शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस। अंग्रेजों द्वारा 1919 में जलियाँवाला बाग में आम निहत्थी जनता पर बर्बर हत्याकाण्ड के प्रत्यक्षदर्शी बालक ऊधमसिंह ने हत्यारों को सजा देने का संकल्प बाँधा था। देश की बेगुनाह जनता पर गोलियाँ चलवायी थीं जनरल डायर ने। ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड जाकर लगभग 20 वर्षों बाद हत्यारे से बदला लिया। भेष बदले ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड के कैंग्स्टन हाल में भरी सभा में सर माइकल ओडवायर को गोलियों से भून दिया। ऊधमसिंह गिरफ़्तार हो गये और अंग्रेज जालिमों ने इसी दिन उन्हें फाँसी की सजा दे दी।

6 अगस्त (1945)

हिरोशिमा दिवस। मानवता के इतिहास में एक काला दिन। इसी दिन अमरीका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला अणु बम गिराया जिसमें लाखों लोग मारे गये, पूरा शहर तबाह हो गया, कई पीढ़ियों तक बच्चे विकलांग पैदा होते रहे। तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर ऐसा ही बम गिराया गया।

9 अगस्त (1942)

अगस्त क्रान्ति दिवस। सारा कांग्रेसी नेतृत्व गिरफ़्तार था। पर नौजवानों के नेतृत्व में जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी। बच्चे-बच्चे की जुबान पर था — 'अंग्रेजों भारत छोड़ो!' ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें काँप गयीं। देश के कई हिस्सों में हफ्तों तक ब्रिटिश शासन को उखाड़कर आज़ाद सरकार कायम रही।

11 अगस्त (1908)

खुदीराम बोस का शहादत दिवस। बंगाल के इस युवा क्रान्तिकारी को ब्रिटिश साम्राज्यवादी हुकूमत ने फाँसी की सजा दे दी थी। इस बहादुर इंक़लाबी की उम्र उस वक़्त महज 19 वर्ष की थी। आज़ादी के दीवाने खुदीराम बोस ने हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया।

15 अगस्त (1947)

स्वतन्त्रता दिवस। हज़ारों-हज़ार लोगों की कुर्बानियों और जनता के लम्बे संघर्ष के बाद इसी दिन देश को आज़ादी मिली। लेकिन यह आज़ादी अधूरी है। सच्ची आज़ादी तब मिलेगी जब सबको शिक्षा, रोज़गार और बराबरी का दर्जा मिलेगा।

24अगस्त (1908)

शहीदे आजम भगतसिंह के अनन्य सहयोगी, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु (राजगुरु के नाम से विख्यात) का जन्म पूना (महाराष्ट्र) के खेड़ा (वर्तमान में राजगुरु नगर) में हुआ था।

28 अगस्त (1828)

महान रूसी उपन्यासकार, 'युद्ध और शान्ति', 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे विख्यात उपन्यासों के रचयिता लेव तोलस्तोय का जन्मदिवस।

29 अगस्त (1979)

प्रसिद्ध बांग्ला क्रान्तिकारी कवि नज़रूल इस्लाम की पुण्यतिथि।

9 सितम्बर (1976)

चीनी समाजवादी क्रान्ति के जनक माओ त्से-तुङ की पुण्यतिथि।

13 सितम्बर (1930)

यतीन्द्रनाथ दास का शहादत दिवस। ब्रिटिश हुकूमत की जेल में राजनीतिक बन्दियों के अधिकारों के लिए अनशन करते हुए सरकार पर दबाव डालने के लिए पानी पीना तक छोड़ दिया। 63 दिन के अनशन के बाद यतीन्द्र ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

16 सितम्बर (1904)

क्रान्तिकारी वीर सपूत शहीद महावीर सिंह का जन्म एटा जिला (उत्तर प्रदेश) के शाहपुर टहला में हुआ था।

25 सितम्बर (1881)

चीन के महान लेखक लू शुन का जन्मदिवस।

28 सितम्बर (1907)

शहीदेआज़म भगतसिंह का जन्मदिवस।

स्मृति वीथिका

श्रीमती कमला पाण्डेय

15 जुलाई 1930 – 26 नवम्बर 2012

श्रीमती कमला पाण्डेयः नयी पीढ़ियों के विकास के लिए आजीवन समर्पित सतत् प्रेरणादायी व्यक्तित्व

अनुराग ट्रस्ट की संस्थापक, वामपंथी सामाजिक कर्मी और 'अनुराग बाल पत्रिका' की मुख्य सम्पादक हमारी सतत् प्रेरणास्रोत कमला पाण्डेय जी 26 नवंबर 2012 को हमें छोड़कर चली गयीं। लखनऊ ही नहीं, प्रतिष्ठित बल्कि देशभर में फैले अनगिनत सामाजिक कार्यकर्ताओं की 'पाण्डेय आण्टी' और बच्चों की 'नानी' श्रीमती कमला पाण्डेय अपनी अन्तिम साँस तक अपने लक्ष्य के लिए सक्रिय रहीं।

15 जुलाई 1930 को कानपुर में जन्मी कमला जी बचपन में ही वामपंथी मज़दूर संगठन. कर्ता और अपने चचेरे भाई शिव शर्मा की प्रेरणा से स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ी थीं। आगे चलकर उनकी शादी कम्युनिस्ट पार्टी के एक संगठनकर्ता जयनारायण पाण्डेय (बाद में लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक) से हुई। उन्होंने शिक्षिका के रूप में काम करते हुए उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षक संघ को संगठित करने में अग्रणी भूमिका निभायी और अवकाश प्राप्ति तक सक्रिय रहते हुए कई बार जेल यात्रा भी की। 1989 में पुत्र अनुराग और 1991 में पति की असमय मृत्यु के बाद कमला जी ने अपना जीवन बच्चों के मोर्चे को समर्पित कर दिया था। 1992 में उन्होंने 'अनुराग बाल केन्द्र' और 'अनुराग बाल पत्रिका' की शुरुआत की। 2001 में इन्हीं कामों को आगे विस्तार देने के लिए 'अनुराग ट्रस्ट' की स्थापना करके कमला जी ने अपना सब कुछ उसे समर्पित कर दिया।

कमला जी का जन्म 15 जुलाई, 1930 को कानपुर के निम्नमध्यवर्गीय परिवार में हुआ।। बचपन इल्तिख़ाराबाद, दलेलपुरवा, कानपुर में बीता। उन्होंने एम.ए., विशारद, एल.टी. की शिक्षा हासिल की। कम्युनिस्ट पार्टी के प्रारम्भिक मज़दूर संगठनकर्ताओं में से एक, स्वतन्त्रता सेनानी, चचेरे भाई **शिव शर्मा** बचपन से ही उनके प्रेरक और मार्गदर्शक रहे। उन्हें याद करते हुए कमला जी ने लिखा है, *"आज से सात दशक पहले, दद्दा ने मेरे बाल मन को एक स्वप्न दिया था, वह था जनमुक्ति में शामिल होकर अपनी मुक्ति के लिए जूझना। उन्होंने मुझे 'स्वर्णिम आलोक-परी' के दर्शन कराये। वह परी थी – समतामूलक मानव केन्द्रित सामाजिक व्यवस्था जो रूढ़ियों-अन्धविश्वासों से मुक्त, वैज्ञानिक सोच पर आधारित हो और जिसमें श्रम की गरिमा केन्द्र में स्थापित हो। तबसे जीवन तमाम आरोहों-अवरोहों, आघातों-संघातों, त्रासदियों-गतिरोधों से गुज़रता रहा, बीच-बीच में निराशा-निरुपायता के अल्पकालिक दौर भी आये, पर मैं उसी यात्रा-पथ में आगे बढ़ती रही।"*

उनका विवाह क्रान्तिकारी कामरेड **जयनारायण पाण्डेय 'सुरेश'** के साथ 21 मई, 1946 को हुआ। लेकिन उनकी राजनीतिक सक्रियता विवाह के पूर्व ही प्रारम्भ हो चुकी थी। कानपुर में नार्मल स्कूल, फिर एम.जी. इण्टर कॉलेज में पढ़ते समय उन्होंने छात्राओं का संगठन बनाकर राष्ट्रीय आन्दोलन के जुलूसों-आन्दोलनों में भागीदारी शुरू कर दी थी। कठिन पारिवारिक ज़िम्मेदारियों और आर्थिक परेशानियों के बावजूद वे विवाह के बाद पार्टी कार्यों में सक्रिय रहीं। कानपुर में हीरामन के पुरवा के एक स्कूल और लखनऊ के खुनखुनजी गर्ल्स इण्टर कॉलेज के बाद, 1954 से 1991 तक वे लखनऊ के लाल. बाग़ अमेरिकन मिशनरी स्कूल में हिन्दी शिक्षक रहीं। 1956 में माध्यमिक शिक्षक संघ के गठन के समय से लेकर 1991 में अपनी सेवानिवृत्ति तक उन्होंने उत्तर प्रदेश के शिक्षक आन्दोलन में अग्रणी संगठनकर्त्री की भूमिका निभायी। यूनियन नेताओं की नेताशाही, समझौतापरस्ती, गुटबाज़ी और संसदवाद के विरुद्ध उन्होंने हमेशा आवाज़ उठायी और इसकी क़ीमत चुकायी। 1968-69 में 'कोठारी कमीशन लागू करो' आन्दोलन में वे जेल गयीं। 1973-74 के जेल भरो आन्दोलन में भी वे शामिल रहीं। उसके बाद 1977-78 में 25 सूत्री माँगपत्रक पर चले आन्दोलन में तीन माह की जेल-यात्रा की। वे माध्यमिक शिक्षक संघ में तीन बार ज़िला मन्त्री, एक बार मण्डलीय प्रभारी, प्रदेशीय चुनाव प्रभारी और कई पदों पर

अनुराग ट्रस्ट के वार्षिकोत्सव (2003) के अवसर पर लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में वयोवृद्ध क्रान्तिकारी शिवकुमार मिश्र, प्रसिद्ध चित्रकार हरिपाल त्यागी तथा प्रख्यात कवि रामकुमार कृषक के साथ कमला पाण्डेय जी

के लिए काम पर सैद्धान्तिक लेखन), **'यादों के घेरे में अतीत'** (संस्मरण), **'हमारे आसपास का अँधेरा'** (कहानियाँ) और **'कालमंथन'** (उपन्यास) का लोकार्पण भी हुआ था।

अत्यधिक आयु के बावजूद वे लगातार ट्रस्ट के कामों में सक्रिय थीं। युवा साथियों से बार-बार वे कहती थीं कि कितना कुछ करने को पड़ा है, हमें और तेज़ी के साथ काम करना होगा। उस उम्र में भी वे प्रतिदिन अपनी मेज़ पर बैठकर कुछ लिखने-पढ़ने, नोट्स लेने, पत्र लिखने और साथियों-सहयोगियों-शुभचिन्तकों के साथ बातचीत में संलग्न रहती थीं। उनकी सतत् प्रेरक उपस्थिति में करीब दो दशक पहले लखनऊ में बच्चों की एक पत्रिका और पुस्तकालय से हुई छोटी-सी शुरुआत आज अनुराग ट्रस्ट के साथियों-सहयोगियों के प्रयासों से लखनऊ, गोरखपुर, गाज़ियाबाद, दिल्ली, पटना, चंडीगढ़, लुधियाना, इलाहाबाद और मुम्बई तक में बहुआयामी गतिविधियों के रूप में विस्तारित हो चुकी है। इन जगहों पर पुस्तकालय-वाचनालय, ग़रीब परिवारों के बच्चों की शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यशाला जैसी गतिविधियाँ चलायी जाती हैं। 'अनुराग' पत्रिका के नियमित प्रकाशन के अतिरिक्त हिन्दी और पंजाबी में बच्चों की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब बंगला, मराठी और अंग्रेज़ी में भी प्रकाशन शुरू करने की योजना है। इस सिलसिले को आगे बढ़ाने के लिए अनुराग ट्रस्ट की ओर से जल्दी ही कमला जी की स्मृति में ट्रस्ट के मुख्यालय पर कुछ नये कार्यक्रमों की शुरुआत की जायेगी। यही कमला जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

अनुराग ट्रस्ट वार्षिकोत्सव (2011) के अवसर पर सम्बोधन

– कमला पाण्डेय

15 अप्रैल 2011 को यू.पी. प्रेस क्लब, लखनऊ में आयोजित अनुराग ट्रस्ट के दसवें वार्षिकोत्सव में आये हुए लोगों को सम्बोधित करती कमला पाण्डेय जी

प्रिय मित्रो और प्यारे बच्चो,

'अनुराग ट्रस्ट' का यह वार्षिकोत्सव कई अर्थों में विशेष है और मैं आह्लादित होने के साथ ही हृदय से आप सबकी आभारी भी हूँ कि आप इस आयोजन में उपस्थित हुए। उम्र के इस पड़ाव पर मैं विश्वासपूर्वक नहीं कह सकती कि अगले किसी ऐसे ही आयोजन में हमारा मिलना फिर हो सकेगा या नहीं। अत: इस बार मुझे अवसर दीजिये कि मैं खुलकर अपने दिल की बातें कर सकूँ, अपने जीवनानुभवों का सार प्रस्तुत कर सकूँ तथा अपनी अन्तिम इच्छा व राजनीतिक वसीयतनामे की घोषणा कर सकूँ। मेरी जिजीविषा अभी भी उतनी ही हठी और युयुत्सु बनी हुई है। भीष्म पितामह की अवस्था में भी मैं निरुपाय शरशैया पर लेटकर न्याय-अन्याय के बीच जारी महाभारत को देखते रहने के बजाय यथाशक्य उसमें भागीदारी करते रहने के लिए

संकल्पबद्ध हूँ।

मेरी दीर्घ जीवन-संघर्ष-यात्रा के प्रेरक थे मेरे चचेरे बड़े भाई स्व. कामरेड शिव शर्मा, जिन्हें इस अवसर पर मैं सबसे पहले नमन करना चाहती हूँ। 'दद्दा' अन्तिम साँस तक जनमुक्ति के लिए संघर्षशील रहे। बचपन में ही घर छोड़ दिया। औपनिवेशिक पराधीनता से मुक्ति की लड़ाई में भागीदारी के मार्ग पर चल पड़े। दबे-कुचले लोगों के बीच रहकर दमन-शोषण की स्थितियों का प्रत्यक्ष अनुभव किया, बम्बई जाकर मिल मज़दूरों से जुड़े, उनकी हड़तालों में हिस्सेदार बने, गौरांग महाप्रभुओं की कोपदृष्टि का शिकार होकर जेल के सींखचों के पीछे रहे, 'बम्बई निकाला' का दंश झेला, लेकिन अडिग-निष्कम्प अपनी राह पर आगे बढ़ते रहे।

1920 में स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय संगठनकर्ता के रूप में उन्होंने कानपुर को अपना ठिकाना बनाया और भूमिगत रहकर पार्टी-निर्माण एवं सुदृढ़ीकरण के कामों में लग गये। कामरेड ने स्वाध्याय के बल पर हिन्दी, अंग्रेज़ी और रशियन भाषाएँ सीखी, आजीवन अविवाहित रहे और कानपुर के चमड़ा कारखानों-टेनरियों के सर्वाधिक शोषित-दमित सर्वहारा वर्ग को सचेत और संघर्षशील बनाने में दत्तचित्तता के साथ लगे रहे। हमेशा मैंने उन्हें तड़के सुबह से लेकर देर रात तक अनथक श्रम करते देखा। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान वे हमारे ही साथ रहते थे। रोज़ मीलों पैदल चलकर जन-सम्पर्क करना, मज़दूरों की गेट मीटिंगें करना और इन सबके बीच समय निकालकर अम्मा और हम सभी भाई-बहनों को देश-दुनिया की स्थितियों से अवगत कराना और पढ़ने-लिखने, जागरूक बनने के लिए प्रेरित करना – यही दद्दा की दिनचर्या थी। मेरी अम्मा दद्दा का लाया हुआ 'लोकयुद्ध' मुझसे नियमित पढ़वाकर सुनती थीं।

आज से सात दशक पहले, दद्दा ने मेरे बाल मन को एक स्वप्न दिया था, वह था जनमुक्ति में शामिल होकर अपनी मुक्ति के लिए जूझना। उन्होंने मुझे 'स्वर्णिम आलोक-परी' के दर्शन कराये। वह परी थी – समतामूलक मानव केन्द्रित सामाजिक व्यवस्था जो रूढ़ियों-अन्धविश्वासों से मुक्त, वैज्ञानिक सोच पर आधारित हो और जिसमें श्रम की गरिमा केन्द्र में स्थापित हो। तबसे जीवन तमाम आरोहों-अवरोहों, आघातों-संघातों, त्रासदियों-गतिरोधों से गुज़रता रहा, बीच-बीच में निराशा-निरुपायता के अल्पकालिक दौर भी आये, पर मैं उसी यात्रा-पथ में आगे बढ़ती रही।

अभी भी मुझे 1945-46 का वह मंज़र याद है जब बम्बई की सड़कों पर विद्रोही जहाज़ियों, हड़ताली फ़ैक्टरी मज़दूरों, डाक कर्मचारियों और छात्रों-युवाओं का सैलाब उमड़ पड़ा था। सामराजी आतताइयों ने मुक्तिकामी जनता के रक्त से बम्बई की सड़कों को लाल कर दिया। अभूतपूर्व दमन-चक्र चला। जनता का साथ देना तो दूर, कांग्रेसी नेताओं ने उस जनविद्रोह की ही निन्दा की। इधर 11.5 प्रतिशत कुलीन-जनों के प्रतिनिधि संविधान सभा में बैठे संविधान बना रहे थे, उधर तेलंगाना, तेभागा, पुनप्रा-वायलार में किसान संघर्ष चरम पर थे। जन-एकता को खण्ड-खण्ड करते हुए द्विराष्ट्र सिद्धान्त को अमली जामा पहनाया गया। 15 अगस्त 1947 को आधी रात के अँधेरे की सौदेबाज़ी से खण्डित-अधूरी आज़ादी मिली, साम्प्रदायिक नरसंहार, लाशों के ढेर और गलियों में बहते लहू के साथ। साम्राज्यवादी वित्तीय पूँजी के हित सुरक्षित रहे। सामन्ती भूस्वामियों को अपना भूस्वामित्व बचाने और शोषण का तरीक़ा बदल लेने का अवसर दिया गया। आज़ाद भारत की सरकार ने तेलंगाना किसान संघर्ष का बर्बर दमन किया। कम्युनिस्ट धारा को कुचलने में सरकार अंग्रेज़ों से रत्ती भर भी पीछे नहीं रही। संविधान लागू हुआ, पर आम लोगों के सारे जनवादी अधिकार उसी मोटी पुस्तक में क़ैद रहे। औपनिवेशिक क़ानून व्यवस्था, नौकरशाही, जेल-पुलिस यथावत् बने रहे। कहने को सार्विक मताधिकार-आधारित आम चुनावों की शुरुआत हुई, पर सारे खेल की डोर पूँजी के हाथों में सिमटी रही। पूँजीवादी व्यवस्था की सीमाएँ जल्दी ही सामने

कमला जी की चार पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना तथा प्रो. रूपरेखा वर्मा। साथ में कार्यक्रम की संचालक कवयित्री कात्यायनी

आ गयीं। संकट ने सीमित लोकतन्त्र की रामनामी चादर को भी तार-तार कर दिया। दमन-तन्त्र चाक-चौबन्द हो गया, धन-तन्त्र का नागपाश प्रचण्ड हो गया, लाठी-तन्त्र का आतंक सर्वव्यापी हो गया। क़ानूनी लूट की सहोदरा ग़ैर-क़ानूनी लूट भी बढ़ी, काले धन और भ्रष्टाचार का घटाटोप छा गया। साम्प्रदायिक फ़ासीवाद का दैत्य पूरे देश में नरसंहार की विनाश लीलाएँ रचने लगा। मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का बड़ा हिस्सा सत्ता के साथ नाभिनालबद्ध होकर अवसरवादी, सुविधाभोगी, कायर और विलासप्रिय होता चला गया। शोषित-उत्पीड़ित श्रमिक जन प्रतीक्षा करते रहे, करते रहे और फिर उनकी निराशा गहराती चली गयी।

तेलंगाना पराजय के बाद से ही भारत की कम्युनिस्ट पार्टी भी मूल लक्ष्य से विमुख होकर महज संसदीय चुनावों और रुटीनी ट्रेड यूनियन संघर्षों की रस्मी कवायदों में सिमटती चली गयी। ख़ुश्चेवी संशोधनवादी सिद्धान्तों के प्रभाव ने विपथगमन को निर्णायक बना दिया। बीच-बीच में क्रान्तिकारी विकल्प की तड़प ने ज़ोर मारा तो विज्ञान की समझ की कमी, अधैर्य और उत्साहातिरेक ने सही शुरुआत को भी अतिवामपन्थी दुस्साहसवादी विचलन के गर्त्त में ले जाकर गिरा दिया। कठमुल्लावाद ने नयी परिस्थितियों के अध्ययन और अपने मौलिक, नये क्रान्ति-मार्ग के सन्धान के बजाय अतीत की क्रान्तियों के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति पैदा की। हमारी पीढ़ी यह सब कुछ देखती-भोगती रही। बहुत सारे कामरेडों के व्यक्तित्व तक टूटते-बिखरते रहे। अब एक बाढ़ से गुज़रकर हम ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ से हमें नयी शुरुआत करनी है।

हमारे सामने सर्वथा नया राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य है। उदारीकरण-निजीकरण के इस दौर में पूँजी की कृत्या राक्षसी पूरी पृथ्वी पर निर्बन्ध दौड़ रही है, नाच रही है, श्रमिक जनों की हड्डियाँ निचोड़ रही है और अट्ठहास कर रही है। मानवद्रोही पूँजीवादी संस्कृति पूरे समाज को मनोरोगी बना रही है। एक अरब बीस करोड़ आबादी वाला हमारा देश दो देशों में बँटा हुआ है। एक ओर 'इण्डिया' है जिसके निवासी हैं जल, जंगल, ज़मीन, कारख़ानों, बैंकों, वित्तीय प्रतिष्ठानों, मॉलों, रिसॉर्टों, फ़ार्महाउसों का मालिक और उपभोगकर्ता, देशी-विदेशी पूँजी के स्वामी, दलाल, ठेकेदार, व्यापारी, नेता और

नौकरशाह! दूसरी ओर भारत है, जहाँ क़रीब 75 करोड़ गाँवों-शहरों के सर्वहारा-अर्द्धसर्वहारा नारकीय गुलामों का जीवन बिताते हैं। जिस देश की 77.5 फ़ीसदी आबादी 20 रुपये रोज़ से कम की आमदनी पर जीती है, उस देश के 60 फ़ीसदी से अधिक संसद सदस्य करोड़पति हैं। देश की एक तिहाई आबादी स्थायी रूप से अकालग्रस्त है, 50 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं, 18 करोड़ लोग बेघर हैं, 18 करोड़ झुग्गियों में रहते हैं, 40 फ़ीसदी माँएँ कुपोषित हैं और 15 लाख बच्चे हर वर्ष अपने पहले जन्मदिन से पहले ही मौत के मुँह में समा जाते हैं। देश के ऊपर के दस फ़ीसदी लोगों के पास कुछ परिसम्पत्ति का 85 प्रतिशत है, जबकि नीचे की 60 फ़ीसदी आबादी के पास मात्र दो प्रतिशत। देश आर्थिक विकास की दर के हिसाब से दुनिया में दूसरे नम्बर पर है, पर मानव विकास सूचकांक के हिसाब से 139वें पायदान पर है तथा 'वैश्विक भूख सूचकांक' 2008 के हिसाब से 88 देशों में 66वें स्थान पर। यह है देश की तरक्की की नंगी, बर्बर तस्वीर। क्या इसी आज़ादी के लिए भगतसिंह और उनके साथियों ने शहादत दी थी? क्या इसी भारत के निर्माण के लिए करोड़ों मुक्तिकामी जनों ने कुर्बानियाँ दी थीं।

साथियो, हमें सोचना ही होगा। यह अनाचार और गतिरोध अस्थायी है। यह "इतिहास का अन्त" नहीं है। साहित्य-कला और विचारों की दुनिया में "इतिहास के अन्त", "सामाजिकता के विघटन", "क्रान्ति के महावृत्तान्तों के समापन" और "जीवन की निरुद्देश्यता" का जश्न मनाने वाले बौद्धिक-सांस्कृतिक कापालिकों की 'वैचारिक तन्त्र-साधना' रोकने के लिए हमें आगे आना ही होगा। विगत युगों में कई बार ऐसा हुआ है कि क्रान्तिकारी प्रयोगों के पहले चक्र विफल या पराजित हुए, फिर अधिक उन्नत और परिष्कृत धरातल पर नये चक्र शुरू हुए और सफल भी हुए। साम्राज्यवाद-विरोधी, पूँजीवाद-विरोधी क्रान्तियों के सन्दर्भ में भी ऐसा ही होगा। भारत इस महासमर

कमला जी को सुनने के लिए उपस्थित नगर तथा बाहर से आये हुए श्रोतागण

की उर्वर भूमि है। यहाँ भी ज़मीन पक रही है। जनज्वार के संकेतों को सजग वैज्ञानिक दृष्टि से क्षितिज पर पहचाना जा सकता है। हमारा इतिहास-बोध यही बताता है।

साथियो, यह मेरे हृदय की गहरी भावना है। मुझे विश्वास है कि समतामूलक समाज-निर्माण का संघर्ष फिर से संगठित होकर आगे डग भरेगा। जब तक साँसें चलती रहेंगी, मैं इस संघर्ष के लिए अगली पीढ़ी की तैयारी में लगी रहूँगी। बुद्धिजीवियों को यदि इतिहास के कूड़ेदान में नहीं जाना है तो उन्हें अपने सुविधापूर्ण अध्ययनकक्षों से बाहर निकलना होगा, उन्हें अपना पक्ष चुनना होगा और मुखर होना होगा। युवाओं को कालकोठरी से भेजा गया भगतसिंह का सन्देश याद करना होगा और क्रान्ति का सन्देश लेकर गाँवों-शहरों के मेहनतकशों की झोपड़ियों तक जाना होगा। प्रतिक्रान्ति के हिमयुगीन सन्नाटे में हमें भविष्य-स्वप्नों के जीवन की लगन से हिफ़ाज़त करनी होगी। आपमें से अधिकांश का लम्बा जीवन अभी सामने पड़ा है, मैं आप सभी को, अपने बाद वाली पीढ़ी को, अपनी और अपनी पीढ़ी के अनुभवों और उम्मीदों की विरासत सौंपना चाहती हूँ और जीवन-समर में समझौताहीन और जुझारू ढंग से जूझते रहने के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

मेरे बाद, मेरी आकांक्षाओं और मेरे स्वप्नों की छवि यदि आपको 'अनुराग ट्रस्ट' और 'राहुल फ़ाउण्डेशन' के युवतर साथियों की योजनाओं और क्रियाकलापों में दिखती रहे और आपकी शुभेच्छा एवं मदद उन्हें मिलती रहे तो इसे मैं अपनी आस्था की विजय समझूँगी। मुझे विश्वास है कि लोक-व्यवहार और समझौताहीन संघर्ष की कसौटियों पर मेरे वैचारिक उत्तराधिकारी सदा खरे उतरेंगे और जनता का भरोसा उन पर बना रहेगा।

●

अनुराग ट्रस्ट के दसवें वार्षिकोत्सव में मंच पर उपस्थित कमला जी
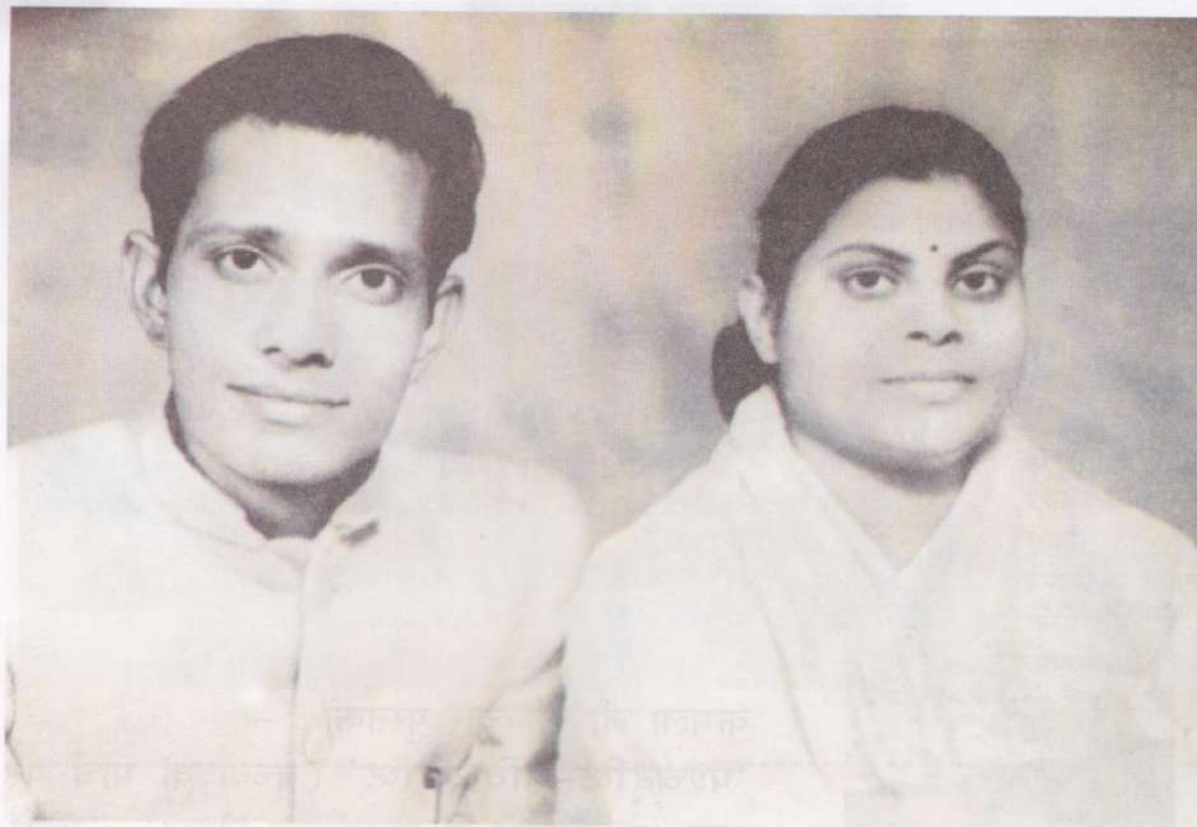
पति श्री जे.एन. पाण्डेय के साथ युववास्था में कमला जी की तस्वीर

इतिहास की गति पर तो नहीं, लेकिन अपने कर्मों पर तो अपना बस है। यदि हमारी आयु तक पहुँचे हुए मुक्ति-समर के साथी चारपाई पर लेटकर मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहने के बजाय अपनी बची-खुची क्षमता के हिसाब से सामाजिक सक्रियता का कोई न कोई मोर्चा चुन लें तो हम बच्चों से कह सकेंगे कि हम तुम्हें एक बेहतर दुनिया तो नहीं दे सके, लेकिन उसके लिए जारी संघर्ष के सिलसिले की विरासत तुम्हें दिये जा रहे हैं और दिये जा रहे हैं पुख़्ता उम्मीदों की एक समृद्ध विरासत।

– कमला पाण्डेय

"बच्चों को बचाओ! सपनों को बचाओ!! भविष्य को बचाओ!!!"

('अनुराग ट्रस्ट' के उद्‌घाटन के अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य, 15 अप्रैल, 2003

कमला जी की चार पुस्तकों – **'पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि'** (बच्चों के मोर्चे पर काम के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक लेखन), **'यादों के घेरे में अतीत'** (संस्मरण), **'हमारे आसपास का अँधेरा'** (कहानियाँ) और **'कालमन्थन'** (उपन्यास) के आवरण चित्र

इतिहास की गति पर तो नहीं, लेकिन अपने कर्मों पर तो अपना बस है। यदि हमारी आयु तक पहुँचे हुए मुक्ति-समर के साथी चारपाई पर लेटकर मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहने के बजाय अपनी बची-खुची क्षमता के हिसाब से सामाजिक सक्रियता का कोई न कोई मोर्चा चुन लें तो हम बच्चों से कह सकेंगे कि हम तुम्हें एक बेहतर दुनिया तो नहीं दे सके, लेकिन उसके लिए जारी संघर्ष के सिलसिले की विरासत तुम्हें दिये जा रहे हैं और दिये जा रहे हैं पुख़्ता उम्मीदों की एक समृद्ध विरासत।

– कमला पाण्डेय

"बच्चों को बचाओ! सपनों को बचाओ!! भविष्य को बचाओ!!!"
('अनुराग ट्रस्ट' के उद्घाटन के अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य, 15 अप्रैल, 2003

अनुराग ट्रस्ट के एक कार्यक्रम में बच्चों को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए कमला जी

हमें न केवल अपनी आने वाली पीढ़ियों को मनुष्यता की बेहतरी और न्याय के लिए संघर्ष करने की शिक्षा देनी है, बल्कि भविष्य के ज़्यादा से ज़्यादा नागरिकों को ज़्यादा से ज़्यादा मानवीय संवेदना देनी है।

– कमला पाण्डेय

हर बच्चे को हम भगतसिंह नहीं बना सकते, लेकिन बहुत सारे बच्चों के भीतर न्यायशीलता, मानवीय संवेदना और तार्किकता की बुनियाद तो डाली ही जा सकती है। समाज में वैज्ञानिक तर्कणा, न्यायशीलता, मानवीय संवेदना का आधार जितना अधिक विस्तारित होगा, भावी सामाजिक क्रान्ति का समर्थन-आधार भी उतना ही अधिक व्यापक होगा।

– कमला पाण्डेय

(बच्चों के मोर्चे पर सांस्कृतिक-रचनात्मक कार्य : एक वैचारिक परिप्रेक्ष्य)

प्रेमचन्द जयन्ती के अवसर पर अनुराग ट्रस्ट द्वारा बच्चों के लिए आयोजित कहानी प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में अपनी मित्र तथा सहयोगी माया चौधरी और कात्यायनी के साथ कमला जी

सामाजिक क्रान्ति एक घटना नहीं बल्कि एक प्रक्रिया है जिसमें हर पीढ़ी अपना दायित्व निभाती है और उत्तराधिकारी पीढ़ी तैयार कर उसे आगे की लड़ाई की विरासत सौंप देती है। अत: हमें पूँजीवादी संस्कृति, जाति-पाँति, साम्प्रदायिकता और अन्धविश्वास के ज़हर से मुक्त करके भविष्य के नागरिकों में वैज्ञानिक सोच और मानवीय संवेदना पैदा करने के लिए बच्चों के मोर्चे पर भी पूरा ज़ोर देकर काम करना होगा।

– कमला पाण्डेय

(जीवन की सान्ध्यबेला में एक वयोवृद्ध कम्युनिस्ट के कुछ नोट्स, कुछ सिंहावलोकन, कुछ पुनर्विचार)

हम आज एक अँधेरे समय में जी रहे हैं। निराशा, यथास्थितिवाद और प्रतिक्रिया का ऐसा घटाटोप इतिहास में दशाब्दियों नहीं, बल्कि शताब्दियों के अन्तराल पर ही देखने को मिलता है। लेकिन मानवता की विकास-यात्रा पहले भी ऐसी अँधेरी सुरंगों से निकलकर प्रकाश की घाटियों में प्रवेश करती रही है और आगे भी ऐसा ही होगा, यह हमारा विश्वास है। वर्तमान यदि अँधेरे की शक्तियों का है, तो भविष्य प्रकाश की शक्तियों का होगा, उन बहुसंख्यक आम जनों का होगा जो तमाम भौतिक-आत्मिक सम्पदा के सर्जक हैं और जिन्हें न्याय, समता और प्रगति के आलोक की सबसे अधिक ज़रूरत है।

– कमला पाण्डेय

"बच्चों को बचाओ! सपनों को बचाओ!! भविष्य को बचाओ!!!"

('अनुराग ट्रस्ट' के उद्घाटन के अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य, 15 अप्रैल, 2003

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरे राजनीतिक विचारों के उत्तराधिकारी नये सर्वहारा पुनर्जागरण-प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक काम में तथा व्यापक जनसमुदाय को संगठित करने के काम में लगातार लगे रहें और इसके लिए अपने बाद की पीढ़ी को तैयार करने के काम में भी लगे रहें।

– कमला पाण्डेय
(मेरी अन्तिम इच्छा : मेरा वसीयतनामा)

अनुराग ट्रस्ट के कार्यक्रमों में बच्चों के साथ कमला जी

अनुराग ट्रस्ट के समस्त कार्यों को मैं क्रान्तिकारी परिवर्तन की तैयारी के महाउपक्रम की एक कड़ी मानती हूँ और एक विचारधारात्मक-राजनीतिक लाइन हमारी एकता की बुनियाद है। अनुराग ट्रस्ट के न्यासी ही मेरे विचारों और सपनों के वारिस हैं और मेरे इस दुनिया में न होने के बाद वे ही मेरे छोड़े हुए कामों को आगे बढ़ायेंगे। अनुराग ट्रस्ट का काम चलता रहे और यह काम जिस भावी सामाजिक परिवर्तन की वैचारिक-सांस्कृतिक तैयारी की एक कड़ी है, वह बुनियादी काम भी लगातार आगे बढ़ता रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

– कमला पाण्डेय
(मेरी अन्तिम इच्छा : मेरा वसीयतनामा)